



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 10

www.csir.res.in

अक्टूबर 2024

सीएसआईआर ने अपना 83वां स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर ने 26 सितंबर 2024 को एनएएससी कॉम्प्लेक्स, पूसा, नई दिल्ली में अपना 83वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन ने स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय कुमार सूद भी मौजूद थे। इस समारोह में विभिन्न सत्र शामिल थे, जैसे कि विकसित भारत @2047 के लिए सीएसआईआर पर विषयगत प्रदर्शनी, सीएसआईआर नेतृत्व सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि।

समारोह की शुरुआत भारत के माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा सीएसआईआर के लिए विकसित भारत @2047 विषयगत प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ हुई। समारोह की प्रदर्शनी में यह प्रदर्शित गया कि विभिन्न क्षेत्रों में सीएसआईआर का योगदान किस तरह 2047 तक भारत के राष्ट्रीय एजेंडे के साथ संरेखित है।

इस अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि यह सीएसआईआर का स्थापना दिवस है, लेकिन



यह भारत की मजबूत नींव से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर ने इस ग्रह पर सबसे जीवंत और कार्यात्मक लोकतंत्र की नींव को मजबूत बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने यह उल्लेख किया कि सीएसआईआर ने भारत की नींव को मजबूत किया है, जो आज से पहले इतना कभी नहीं बढ़ा है, और यह वृद्धि अजेय है। उन्होंने सीएसआईआर को "वैज्ञानिक रूप से कल्पनाशील राष्ट्र के लिए उत्प्रेरक" बताया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) स्थापित करने की भी अपील की कि मानव संसाधन और

संस्थानों में निवेश प्रामाणिक और प्रभावशाली अनुसंधान की ओर निर्देशित हो। सीएसआईआर को अपनी शुभकामनाएं देते हुए श्री धनखड़ ने कहा कि सीएसआईआर उत्कृष्टता, अकादमिक प्रतिभा और अत्याधुनिक अनुसंधान का एक विशिष्ट उदाहरण है।

इस अवसर पर माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने एक वीडियो संदेश में कहा कि सीएसआईआर महिलाओं को विज्ञान में बढ़ावा देकर, आर्थिक विकास को गति देकर और नवाचारों से समाज को लाभ पहुंचाकर भारत को विज्ञान में वैश्विक नेता बनाने में महत्वपूर्ण



भूमिका निभाता है। अपनी पहलों के माध्यम से, सीएसआईआर स्वदेशीकरण को बढ़ावा देकर विकसित भारत @2027 विजन में योगदान दे रहा है।

डॉ. सिंह ने कहा कि सीएसआईआर हम सभी के लिए एक राष्ट्रीय कोष के समान है और हमारे समय का सच्चा परिवर्तनकर्ता है। उन्होंने सीएसआईआर को हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकी और कृषि आधारित स्टार्ट-अप जैसी विभिन्न अनुसंधान एवं विकास सफलताओं में हमारे देश को गौरवान्वित करने के लिए उसके 83 वें स्थापना दिवस पर बधाई दी और कहा कि सीएसआईआर ने किसानों और आम लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डॉ. सिंह ने कहा कि लैवेंडर की खेती ने जम्मू और कश्मीर के परिदृश्य को बदल दिया है, जिससे यह क्षेत्र आज कृषि आधारित उद्यमिता का केंद्र बन गया है।

तत्पश्चात प्रो. अजय कुमार सूद ने अपने संबोधन में भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के एक बहुमूल्य विचार को उद्धृत किया कि "आर्थिक विकास प्रतिस्पर्धा से प्रेरित होता है। प्रतिस्पर्धा ज्ञान से प्रेरित होती है। ज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार से प्रेरित होता है"। उन्होंने आगे कहा कि प्रौद्योगिकी और नवाचार मौलिक विज्ञान द्वारा संचालित होते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि मुझे यकीन है कि सीएसआईआर भारत को वर्तमान में प्रमुख सेवा अर्थव्यवस्था से ऊपर आगे लाकर एक प्रमुख

उत्पाद राष्ट्र बनाकर जल्द ही पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनने के अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्य दिशा में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इससे पहले, अपने स्वागत भाषण में सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन कलैसेल्वी ने 2014 में भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के विजन के लिए सीएसआईआर के योगदान और प्रतिबद्धताओं पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर ने इस दिशा में दूरदर्शी नेताओं की संस्तुतियों को प्राप्त करने और इसे हमारा रोडमैप बनाने के लिए एक नेतृत्व सम्मेलन का आयोजन किया है।

अपने व्याख्यान के दौरान डॉ. के. राधाकृष्णन ने "टीम उत्कृष्टता और भारतीय अंतरिक्ष यात्रा" पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि कैसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान टीम उत्कृष्टता और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ा है और देश के सभी अंतरिक्ष मिशनों में सफलता प्राप्त की है।

इस अवसर पर इन्वैशन ट्रेलब्लेजर्स: द लीडरशिप लेगेसीज ऑफ सीएसआईआर नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक सीएसआईआर के चौबीस महानिदेशकों के उल्लेखनीय नेतृत्व को प्रस्तुत करती है, जिन्होंने 1942 में सीएसआईआर की स्थापना के बाद से इसका नेतृत्व किया और इसे एक विशेष आकार

प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह उनकी दूरदर्शिता, वैज्ञानिक योगदान और विरासत को प्रदर्शित करती है। इसके बाद, सीएसआईआर की फिल्म भी प्रदर्शित की गई, जिसमें आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैज्ञानिक उत्कृष्टता और नवाचार के लिए सीएसआईआर की यात्रा, उपलब्धियों और प्रतिबद्धताओं को दर्शाया गया।

इसके अलावा, इस समारोह में सीएसआईआर ऊर्जा बचत अभियान के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया, जिसमें सीएसआईआर-सीजीआरआई को प्रथम पुरस्कार, सीएसआईआर-सीईसीआरआई को दूसरा पुरस्कार और सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई को तीसरा पुरस्कार मिला। सीएसआईआर और एनर्जी स्वराज फाउंडेशन ने मिलकर जून, जुलाई और अगस्त 2024 के दौरान सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में ऊर्जा की खपत को कम करने के उद्देश्य से ऊर्जा-बचत अभियान शुरू किया। प्रथम सत्र का समापन करते हुए सीएसआईआर

के डीजीईडी प्रमुख और सीएसआईआर स्थापना दिवस 2024 समन्वयक डॉ. जी महेश ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। अपने दूसरे सत्र में, सीएसआईआर ने एक अद्वितीय और अपनी तरह का पहला नेतृत्व सम्मेलन आयोजित किया,

जहां सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक विकसित भारत 2047 के लिए सीएसआईआर का योगदान क्या हो सकता है, इस पर अपने दृष्टिकोण और सुझाव साझा करने के लिए एकत्रित हुए।

83 वें स्थापना दिवस 2024 की शाम एक

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ संपन्न हुई, जिसमें ओडिसी नृत्य प्रदर्शन, पद्मश्री माधवी मुद्गल एवं टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन गतिविधियों के साथ सीएसआईआर-स्थापना दिवस कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के 83वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 30.09.2024 को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, पूसा, नई दिल्ली में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रोफेसर रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि सीएसआईआर प्रयोगशालाएं विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लगभग सभी क्षेत्रों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। सीएसआईआर-निस्पर में, हमारा ध्यान विज्ञान और समाज के बीच की खाई को पाटने पर है। हम 15 शोध पत्रिकाएँ और तीन लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं, और हम अपनी सामग्री को सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिकों के हाल ही में यूएन असेंबली साइंस समिट में भाग लेने का भी उल्लेख किया।

इस अवसर पर प्रोफेसर (डॉ.) सुषमा यादव, एसोसिएट वाइस चांसलर, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, जो इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थीं, ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि सीएसआईआर विज्ञान और उद्योग के बीच की खाई को पाटने की निरंतर कोशिश कर रहा है

और बहुत सीमा तक अपने इस प्रयास में सफल भी हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐतिहासिक रूप से, एक गलत धारणा है कि भारत में वैज्ञानिक मानसिकता का अभाव है और सीएसआईआर इस धारणा को दूर करने के लिए एक पूर्ण समर्पण के साथ काम कर रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि आध्यात्मिक सोच के साथ सह-अस्तित्व वाली वैज्ञानिक परंपरा को बढ़ावा देकर, हमारा उद्देश्य तर्कसंगत जांच और सांस्कृतिक मूल्यों का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण बनाना है।

कार्यक्रम के अगले चरण में कंसोर्टियम फॉर एजुकेशन कम्युनिकेशन के निदेशक प्रोफेसर जगत भूषण नड्डा ने अपने सम्बोधन में कहा कि सीएसआईआर ने भारत की वैज्ञानिक विरासत को सराहनीय तरीके से आगे बढ़ाया है और हमारे देश की यात्रा में आधारशिला के रूप में काम किया है। सीएसआईआर ने राष्ट्रीय चुनौतियों का समाधान करने में सबसे आगे रहकर बड़े पैमाने पर समाज को लगातार लाभान्वित किया है। उन्होंने कहा कि आज समय की मांग है कि विज्ञान को और अधिक सुलभ बनाया जाए, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी पहुँच को अधिकाधिक रूप में सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि वैज्ञानिक अनुसंधान और खोजों को योग्य नीतियों में तब्दील किया जा सके। सीएसआईआर उच्च शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के बीच सफलतापूर्वक तालमेल बना रहा है, जिससे भारत विज्ञान और नवाचार में वैश्विक



स्तर पर अग्रणी राष्ट्र बनने की स्थिति में हो सके।

इस अवसर पर समारोह के दौरान सीएसआईआर-निस्पर की मासिक पत्रिका 'साइंस रिपोर्टर' के विशेष अंक का भी विमोचन किया गया। पत्रिका के इस अंक का शीर्षक "साइंस रिपोर्टर: ए सिक्स डिकेड जर्नी इन साइंस कम्युनिकेशन (1964-2024)" था। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों जिसमें 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कार्मिक शामिल थे तथा 10वीं एवं



12वीं कक्षा के मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित किए। सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह की शाम को एक जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसके बाद स्थापना दिवस प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान, निस्पर, एसएंडटी

के स्टाफ सदस्यों और प्रशासनिक कर्मचारियों, बच्चों, छात्रों और परियोजना कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और अपने गीत और नृत्य प्रस्तुत किए। श्री मुकेश पुंड, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर और अध्यक्ष, सीएसआईआर स्थापना दिवस आयोजन समिति ने अपना आभार व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने

कार्यक्रम के आयोजन में सक्रिय सभी समितियों को धन्यवाद दिया। समारोह में सीएसआईआर-निस्पर कर्मचारियों के साथ उनके परिवार, एसीएसआईआर छात्र और परियोजना कर्मचारी उपस्थित थे।

पद्मश्री प्रो. शैलेश नायक का सीएसआईआर-एनजीआरआई का दौरा

पद्मश्री प्रो. शैलेश सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान के सम्मानित मार्गदर्शक और अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष डॉ. नायक ने हाल ही में राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान का दौरा किया। इस अवसर पर संस्थान ने अपने प्रमुख अनुसंधान और विकास उपलब्धियों को प्रो. नायक के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस दौरे की शुरुवात सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक डॉ. प्रकाश कुमार के एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान से हुई, जिसमें उन्होंने अनुसंधान एवं विकास में संस्थान की उल्लेखनीय प्रगति पर प्रकाश डाला। इसके बाद, डॉ. प्रांतिक मंडल, डॉ. बुलुसु श्रीनिवास, डॉ. लाबनी रे, डॉ. संदीप गुप्ता और डॉ. रंजना घोष सहित प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा कई आकर्षक प्रस्तुतियाँ

दी गईं, जिनमें से प्रत्येक ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रमुख नवाचारों का विवरण दिया।

इस अवसर पर प्रो. नायक ने अपने विचार साझा करते हुए संस्थान की भावी अनुसंधान दिशाओं के लिए बहुमूल्य प्रतिक्रिया दी और कुछ महत्वपूर्ण सिफारिशें साझा कीं। उन्होंने "विकसित भारत 2047" के राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

इस दौरे पर प्रो. नायक ने लेजर इंटरफेरोमीटर सीस्मोलॉजिकल ऑब्जर्वेटरी (LISO) के प्रायोगिक स्थल का भ्रमण किया, जो सूक्ष्म भूकंपीय तरंगों का पता लगाने के लिए अभिकल्पित की गई एक अभूतपूर्व परियोजना है। यह भारत की एक उत्कृष्ट एवं अनूठी पहल है। प्रो. नायक ने एक नई एलआईएसओ सुविधा के निर्माण की आधारशिला



भी रखी, जो इस अभिनव शोध को बढ़ावा देगी।

कार्यक्रम का समापन निदेशक प्रोफेसर नायक और सीएसआईआर-एनजीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के बीच उपयोगी विचारों के आदान-प्रदान के साथ हुआ, जिसमें वैज्ञानिक प्रगति के मूल्यांकन और भूभौतिकीय और भूवैज्ञानिक अनुसंधान में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई गई।

सीएसआईआर ने विशेष स्वच्छता अभियान 4.0 के तहत नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सफाई अभियान चलाया



भारतीय रेलवे के साथ सहयोग और कई प्रौद्योगिकियां, विशेष रूप से अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित प्रौद्योगिकियां शामिल थीं।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सीएसआईआर के महानिदेशक और डीएसआईआर के सचिव डॉ. एन. कलैसेल्वी ने की, जिसमें श्री महेंद्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्रशासन), डॉ. रामानुज नारायण, निदेशक, सीएसआईआर-आईएमएमटी, श्री मयंक माथुर, मुख्य वैज्ञानिक और नोडल अधिकारी, विशेष स्वच्छता अभियान 4.0, डॉ.ए.एस. निर्मला देवी, प्रधान वैज्ञानिक और उप नोडल अधिकारी और सीएसआईआर के अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। उत्तर रेलवे से, श्री महेश यादव, स्टेशन निदेशक और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और अपना समर्थन दिया।

सीएसआईआर और भारतीय रेलवे के बीच ये भागीदारी स्वच्छ भारत अभियान के तहत विशेष अभियान 4.0 के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक एकीकृत प्रयास का उदाहरण है।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने विशेष अभियान 4.0 के तहत उत्तरी रेलवे के साथ मिलकर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सफाई अभियान चलाया। सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के स्टेशन निदेशक श्री महेश यादव ने इस सफाई अभियान का नेतृत्व किया। कार्यक्रम के दौरान, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के सफाई मित्रों को सीएसआईआर द्वारा सम्मानित किया गया, जो सार्वजनिक स्वच्छता बनाए रखने में सफाई कर्मचारियों के योगदान के प्रति सीएसआईआर की संवेदनशीलता को रेखांकित करता है। इस अभियान के दौरान, उत्तरी रेलवे ने रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता बनाए रखने के लिए

अपने विभिन्न उन्नत मोटर चालित उपकरणों और सफाई प्रणालियों का प्रदर्शन किया।

पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए, सीएसआईआर के महानिदेशक तथा वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) के सचिव; सीएसआईआर के संयुक्त सचिव और सीएसआईआर-आईएमएमटी के निदेशक ने एक वृक्षारोपण अभियान का नेतृत्व किया। यह प्रयास सीएसआईआर की चल रही पहल एक पेड़ माँ के नाम के साथ जुड़ा हुआ था, जिसका उद्देश्य हरित क्षेत्र को बढ़ाना और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देना है।

सीएसआईआर दल ने इस अवसर पर एक नाटक भी प्रस्तुत किया, जिसमें सीएसआईआर के योगदान को दर्शाया गया था तथा इसमें

सीएसआईआर-आईआईटीआर में विश्व खाद्य दिवस का आयोजन

सीएसआईआर भारतीय विषयविज्ञान अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-आईआईटीआर) ने एसोसिएशन ऑफ फूड साइंटिस्ट्स एंड टेक्नोलॉजिस्ट्स (इंडिया), लखनऊ चैप्टर तथा एसोसिएशन ऑफ टॉक्सिकोलॉजिस्ट्स एंड रिस्क असेसर्स (एएसटीआरए) के सहयोग से महात्मा गांधी मार्ग स्थित मुख्य परिसर में विश्व खाद्य दिवस 2024 मनाया।

विश्व खाद्य दिवस प्रत्येक वर्ष 16 अक्टूबर को मनाया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न से जुड़े संकट को दूर करना एवं लोगों के बीच जागरूकता का प्रसार करना है। यह दिवस हमें वैश्विक स्तर पर भूख और कुपोषण से जुड़ी स्थायी चुनौतियों की याद दिलाता है तथा इस तथ्य पर भी प्रकाश डालता है कि खाद्य उत्पादन की समग्र प्रचुरता के बावजूद, दुनिया भर में लाखों लोग अभी भी पर्याप्त और पौष्टिक भोजन से वंचित हैं।

इस अवसर पर श्री संजय दवे, अंतर्राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सलाहकार (कोडेक्स के पूर्व अध्यक्ष तथा एफएसएसएआई के पूर्व सलाहकार) ने विश्व खाद्य दिवस पर “स्वस्थ जीवन तथा बेहतर भविष्य के लिए भोजन के अधिकार” पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मौलिक अधिकार, जो भारत के संविधान में निहित बुनियादी मानव अधिकार हैं, में भोजन को भी शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने उल्लेख किया कि यद्यपि भोजन के अधिकार के संबंध में कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है, फिर भी अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) में भोजन के अधिकार को भी शामिल किया जा सकता है। यह मानव शरीर की बुनियादी आवश्यकता है और इसलिए



सुरक्षित तथा पौष्टिक भोजन की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। खेत से लेकर थाली तक सर्वोत्तम प्रथाओं का कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है और इसे प्राप्त करने के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है। उन्होंने इसके लिए मानक निर्धारित करने तथा नियमों को निर्देशित करने में सीएसआईआर आईआईटीआर की भूमिका पर जोर दिया, जो सुरक्षित और पौष्टिक भोजन के अधिकार को सुनिश्चित करने की वकालत करता है।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री विश्वास उजीरे, निदेशक-ऑपरेशन एक्सीलेंस, अक्षय पात्र, बेंगलुरु ने भूख उन्मूलन और शिक्षा को सशक्त बनाने में पीएम पोषण और अक्षय पात्र की भूमिका पर एक केस स्टडी प्रस्तुत की। इसी प्रकार भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया तथा राज्य सरकारों द्वारा लागू किया गया मध्याह्न भोजन कार्यक्रम एक अनुठी पहल है, जिसे विशेष रूप से सरकार द्वारा संचालित स्कूलों में भाग लेने वाले वंचित बच्चों के लिए भूख और शिक्षा दोनों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर, यह कार्यक्रम स्कूल में उपस्थिति, एकाग्रता और

जिज्ञासा को बेहतर बनाने में मदद करता है, जिससे दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है।

डॉ. भास्कर नारायण, निदेशक, सीएसआईआर आईआईटीआर ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि यदि भोजन के अधिकार को सुनिश्चित करना है तो हमें ‘विज्ञान आधारित’, ‘सुरक्षित’ तथा ‘स्वास्थ्यवर्धक’ जैसे वाक्यांशों पर जोर देना होगा ताकि आवश्यक उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना केवल उपलब्धता पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि जलवायु परिवर्तन और बढ़ती असमानताओं को ध्यान में रखते हुए पहुंच और स्थिरता पर भी निर्भर है। इससे पूर्व, डॉ. आर पार्थासारथी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर आईआईटीआर ने सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया तथा सभागार को विश्व खाद्य दिवस समारोह के बारे में जानकारी प्रदान की।

तत्पश्चात डॉ. संदीप शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर आईआईटीआर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

सीएसआईआर-सीरी के वैज्ञानिक श्री चिराग मिस्त्री को आईआई यंग इंजीनियर्स अवार्ड प्रदान किया गया।

सीएसआईआर-सीरी के वैज्ञानिक श्री चिराग प्रकाशचंद्र मिस्त्री को मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिवीजन में प्रतिष्ठित 'आई ई आई यंग इंजीनियर्स अवार्ड 2024-25' से सम्मानित किया गया है।

यह सम्मान उन्हें दिनांक 13-14 सितंबर, 2024 को चंडीगढ़ में आयोजित यांत्रिक अभियन्ताओं के 39वें राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान प्रदान किया गया। इस सम्मान के अंतर्गत चिराग को प्लैक (स्मृति चिह्न) एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गया।

'आईआईआई यंग इंजीनियर्स अवार्ड' प्रत्येक वर्ष उन युवा अभियन्ताओं और वैज्ञानिकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया हो। यह पुरस्कार अभियांत्रिकी अनुसंधान में उत्कृष्टता, नवीन प्रौद्योगिकी विकास, और समाज कल्याण के लिए तकनीकी नवाचारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है। वर्तमान में श्री चिराग मिस्त्री सीएसआईआर-सीरी में वरिष्ठ

वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत हैं और संस्थान के माइक्रोवेव डिवीज़न में ट्रेवलिंग वेव ट्यूब्स के अभिकल्पन एवं विकास के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। संस्थान के निदेशक और स्टाफ ने चिराग मिस्त्री की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

गतवर्ष संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. राहुल प्रजेश को इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग डिवीज़न



**IEI YOUNG ENGINEER AWARD
2024-2025**
Mechanical Engineering

MR. CHIRAG PRAKASHCHANDRA MISTRY
Senior Scientist, CSIR-CEERI, Pilani



में इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। ये सम्मान संस्थान के अन्य युवा वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों को अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए प्रेरित करते हैं।

आईआईआई युवा अभियंता पुरस्कार- इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) द्वारा प्रदत्त युवा अभियंता पुरस्कार अनुसंधान, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण आदि उत्कृष्ट कार्यों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 35 वर्ष से कम

आयु वर्ग के अभियन्ताओं को प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार का उद्देश्य इन क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले अभियन्ताओं को सम्मानित करना है।

इसके अंतर्गत सभी 15 इंजीनियरिंग डिवीज़नों के विजेताओं को संस्था द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में सम्मानित किया जाता है।

सीएसआईआर-नीरी में 83वें सीएसआईआर स्थापना दिवस का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियंत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-नीरी) ने 4 अक्टूबर 2024 को नीरी सभागार में 83 वें सीएसआईआर दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रो. रंगन बनर्जी, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। डॉ. अतुल एन. वैद्य, निदेशक, सीएसआईआर- नीरी और श्री प्रकाश कुंभारे, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर- नीरी ने इस अवसर पर मंच साझा किया।

इस अवसर पर प्रो. बनर्जी ने "स्थायित्व और पर्यावरण अनुसंधान की चुनौती" विषय पर व्याख्यान देते हुए, वर्तमान उपभोगता पैटर्न पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से हो रही वृद्धि सीधे तौर पर अस्थिर प्रथाओं से जुड़ी हुई है। उन्होंने इंटरगवर्नमेंटल साइंटिफिक कार्बन ऑब्जर्वेशनल नेटवर्क (आईएससीओएन) के डाटा पर प्रकाश डाला और CO2 सांद्रता और वैश्विक तापमान संतुलन के बीच प्रत्यक्ष संबंध को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि होलोसीन युग से बरकरार तापमान स्थिरता आज के युग में सबसे अधिक प्रभावित हुई है। उन्होंने ने CO2 उत्सर्जन को सीमित करने के लिए ऊर्जा प्रणालियों में महत्वपूर्ण सुधारों की वकालत की और संधारणीय विकास लक्ष्यों



(एसडीजी) के अनुरूप जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि संधारणीयता के मुद्दों को हल करने के लिए हमें नई प्रौद्योगिकियों तथा उनके सामाजिक और आर्थिक प्रभाव के संबंध में एक ठोस दृष्टिकोण की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि वैज्ञानिक ज्ञान के महत्वपूर्ण अंतराल को कम करने के लिए जिज्ञासा और नवाचार को बढ़ावा देना आवश्यक है। प्रो. बनर्जी ने यह भी बताया कि भावी संधारणीयता को सुनिश्चित करने के लिए वायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा का गहन विश्लेषण किया जाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने आईआईटी दिल्ली के

महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों का उल्लेख किया और सीएसआईआर-नीरी के साथ सहयोगपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य करने की इच्छा व्यक्त की।

सीएसआईआर-नीरी के निदेशक डॉ. अतुल वैद्य ने अपने स्वागत भाषण में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की स्थापना के पीछे के उद्देश्य एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस संगठन का उद्देश्य वैज्ञानिक उत्कृष्टता और तकनीकी नवाचार के द्वारा समाज को लाभ पहुंचाना है। उन्होंने एक संतुलित दृष्टिकोण की

आवश्यकता पर बल दिया जहां दोनों मौलिक विज्ञान और अनुप्रयुक्त प्रौद्योगिकी एक साथ मिलकर जटिल सामाजिक समस्याओं यथा- जलवायु परिवर्तन और संधारणीय संसाधन प्रबंधन के लिए बेहतर समाधान निकालें।

डॉ. देबिशी खान ने इस कार्यक्रम का संचालन किया और प्रकाश कुंभारे ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-नीरी के वे कर्मचारी जिन्होंने 25 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है, तथा वे कार्मिक जो सितम्बर 2023 और अगस्त 2024 के बीच सेवानिवृत्त हुए थे, को सम्मानित किया गया। पर्यावरण पत्रिका के ई-संस्करण का लोकार्पण भी इस अवसर किया गया।

इसके अतिरिक्त भारत में बांस विविधता और सतह कटाव के रोकथाम में इसकी भूमिका नामक एक पुस्तक भी लोकार्पण किया गया।

तत्पश्चात 'जिज्ञासा' पहल के तहत 'सूक्ष्म अनुसंधान परियोजना प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। प्रथम श्रेणी (5 वीं से 7 वीं कक्षा) में प्रथम पुरस्कार स्वातंत्र्यवीर सावरकर विद्या भवन महल, नागपुर को 'प्लास्टिक पुनर्चक्रण संयंत्र'; के मॉडल को प्रस्तुततीकरण हेतु प्रदान किया गया, दूसरा पुरस्कार पुरस्कार ललिता पब्लिक स्कूल, वर्धमान नगर, नागपुर को "कचरा जनित बिजली के अनुप्रयोग द्वारा वन अग्नि के लिए अग्नि चेतावनी और अग्निशमन' विषय पर मॉडल प्रस्तुततीकरण हेतु प्रदान किया गया। 'स्मार्ट डस्टबिन' पर आधारित मॉडल हेतु तीसरा पुरस्कार मुंडले इंग्लिश मीडियम स्कूल, नागपुर को प्रदान किया 'वर्षा जल संचयन' और ज्ञान प्राप्ति' मॉडल तथा "अपशिष्ट जल उपचार प्रबंधन" के लिए



प्रोत्साहन पुरस्कार क्रमशः अंजुमन इंग्लिश प्राइमरी स्कूल, नागपुर तथा नेस्ट पब्लिक स्कूल, नागपुर को विद्यालय नागपुर को प्रदान किया गया।

दूसरी श्रेणी (8 वीं -10 वीं कक्षा) में प्रथम पुरस्कार सोमलवार हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज निकलास शाखा नागपुर को 'घरेलू जल उपचार संयंत्र' मॉडल के लिए दिया गया। इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार ललिता पब्लिक स्कूल, वर्धमान नगर, नागपुर को 'प्लास्टिसस्टेन ठोस पहल' मॉडल के लिए तथा तीसरा पुरस्कार कर्मणोय उत्कृष्ट विद्यालय का 'सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट' मॉडल के लिए प्रदान किया गया। प्रोत्साहन पुरस्कार- केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी अंबाझरी और नारायण विद्यालयम् चिंचभुवन को क्रमशः 'संधारणीय विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण' और 'प्रिवेंटिया' विषय पर मॉडल हेतु प्रदान किया गया।

तीसरी श्रेणी में (11 वीं) -12 वीं कक्षा) के अंतर्गत पहला पुरस्कार केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी अंबाझरी को 'सूक्ष्म शैवाल

बहुउपयोगी भावी ऊर्जा स्रोत ' पर मॉडल प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया। दूसरा पुरस्कार संदीपनी जूनियर कॉलेज, हजारीपहाड़ को 'स्मार्ट सिंचाई प्रणाली: प्रीसीजन फार्मिंग' और तीसरा पुरस्कार पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय, अजनी को 'जल प्रबंधन' पर मॉडल प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया।

ओपन डे के तहत संस्थान को छात्रों सहित आम जनता के लिए खोल दिया गया। नागपुर और विदर्भ के 59 स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों ने संस्थान का दौरा किया। नीरी के वैज्ञानिकों ने आगंतुकों को संस्थान के महत्वपूर्ण अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ और उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया। आगंतुकों ने संस्थान में लगाई गई प्रदर्शनियों और हरित संग्रहालय का दौरा किया।

उन्हें पर्यावरण विज्ञान और अभियांत्रिकी से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर वैज्ञानिकों के साथ परस्पर बातचीत करने का अवसर प्रदान किया गया।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने हैपिको इंडस्ट्रीज, आईजीसी के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया।

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम) जम्मू और मैसर्स हैपिको इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, आईजीसी ने उत्पाद परीक्षण/गुणवत्ता नियंत्रण, गुणवत्ता आश्वासन और नए हेल्थकेयर और न्यूट्रास्युटिकल उत्पादों के संयुक्त विकास पर सहयोग करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर



किए हैं। इस अवसर पर सीएसआईआर-आईआईआईएम के प्रवक्ता ने कहा कि इस सहयोग का उद्देश्य गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता आश्वासन में सीएसआईआर-आईआईआईएम की विशेषज्ञता और कृषि और न्यूट्रास्युटिकल उत्पादों के विकास में हैपिको की दक्षता का लाभ उठाना है। उन्होंने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के स्थानीय क्षेत्र के किसान भी इस सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं, क्योंकि यह केंद्र शासित प्रदेश की बढ़ती कृषि-अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

इस अवसर पर डॉ. ज़बीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईआईएम ने हैपिको के साथ नई साझेदारी के बारे में उत्सुकता व्यक्त की। उन्होंने कहा, "यह सहयोग वैज्ञानिक

खोजों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में बदलने के सीएसआईआर-आईआईआईएम के मिशन के साथ पूरी तरह से संरेखित है। उन्होंने बताया कि "हैपिको की उद्योग विशेषज्ञता का लाभ उठाकर, हम अपने संसाधनों की पूरी क्षमता का दोहन करना चाहते हैं, जिससे आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संधारणीयता दोनों को बढ़ावा मिले।" उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह अभिनव साझेदारी स्थानीय किसानों को उनकी फसलों का मूल्य बढ़ाने, नए उत्पाद विकसित करने और बड़े बाजारों तक पहुँचने के लिए सशक्त बनाकर उन्हें काफी लाभान्वित करेगी। हैपिको जिसे उद्योग जगत में अपने अग्रणी प्रयासों के लिए जाना जाता है, इस सहयोग को अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करने और क्षेत्र में विकास को गति देने की दिशा में

एक रणनीतिक कदम के रूप में देखता है। हैपिको के प्रबंध निदेशक शबीर अहमद ने कहा कि सीएसआईआर-आईआईआईएम की वैज्ञानिक विशेषज्ञता के साथ, हैपिको बाजार की उभरती जरूरतों को पूरा करने वाले अभिनव एवं संधारणीय समाधान प्रदान करने की स्थिति में है।

इस समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह में दोनों संगठनों के प्रमुख अधिकारियों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया, जिसमें अरोमा उद्योग में वैज्ञानिक सहयोग एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए उनकी पारस्परिक प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन सीएसआईआर-आईआईआईएम अरोमा मिशन टीम द्वारा किया गया।

सीएसआईआर-एनपीएल ने सीएसआईआर का 83वां स्थापना दिवस मनाया



सीएसआईआर- राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल) ने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का 83वां सीएसआईआर स्थापना दिवस एनपीएल परिसर नई दिल्ली में मनाया।

इस समारोह की शुरुआत औपचारिक दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक प्रो. वेणु गोपाल अचंता ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने गणमान्य व्यक्तियों, एनपीएल से सेवानिवृत्त कर्मिकों, वैज्ञानिकों, छात्रों, कर्मचारियों और अन्य आमंत्रित लोगों का अभिवादन किया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी त्रिवेंद्रम के निदेशक डॉ. संजय बिहारी द्वारा दिया गया सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान था। उन्होंने बायोमेडिकल डिवाइस

विकास और परीक्षण के क्षेत्र में मेट्रोलॉजी की भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि देश के भीतर बायोमेडिकल डिवाइस विकास में रुचि बढ़ रही है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि डिवाइस का व्यावसायीकरण किसी भी उत्पाद विकास की वास्तविक सफलता का पैमाना है। उन्होंने बायोमेडिकल इंस्ट्रूमेंटेशन के लिए मानक संदर्भ सामग्री की भूमिका के बारे में भी बताया।



सीएसआईआर के साथ 25 साल की सेवा पूरी करने वाले और 30 सितंबर 2023 और 31 अगस्त 2024 के बीच सेवानिवृत्त होने

वाले कर्मचारियों को संगठन में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

स्थापना दिवस समारोह के समग्र समन्वयक डॉ. राजेश द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों और उपस्थित लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर छात्रों और कर्मचारियों के बच्चों के लिए एक निबंध, ड्राइंग, पेंटिंग और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता के विजेताओं को सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह में सम्मानित किया गया। इसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में कर्मचारियों, उनके परिवार के सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया।

सीएसआईआर-निस्पर में 9वें आयुर्वेद दिवस का आयोजन किया गया



सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने दिनांक 25.10.2024 को 9वें आयुर्वेद दिवस का आयोजन किया जिसमें आधुनिक स्वास्थ्य सेवा में आयुर्वेद के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस दिवस की शुरुआत संस्थान के एस.वी. मार्ग परिसर में आयोजित वृक्षारोपण अभियान "एक पेड़ माँ के नाम" से हुई। इसके बाद सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने उद्घाटन भाषण दिया।

प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने हमारे देश में अतीत में, खास तौर पर वैदिक काल में उपलब्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत के महान प्राचीन ज्ञान केंद्रों नालंदा और तक्षशिला के बारे में बात की। प्रोफेसर अग्रवाल ने कहा कि सीएसआईआर- निस्पर स्वस्तिक (वैज्ञानिक रूप से मान्य सामाजिक पारंपरिक

ज्ञान) नामक एक राष्ट्रीय पहल का समन्वय कर रहा है और इस पहल में, हम भारतीय



पारंपरिक ज्ञान के केस स्टडी और कहानियाँ सामने लाते हैं और उन्हें समाज के साथ साझा करते हैं।

तत्पश्चात निस्पर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मोनिका जग्गी ने अतिथि वक्ता डॉ. भवन प्राशर, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईजीआईबी, नई दिल्ली का संक्षिप्त परिचय

दिया। डॉ. प्रशर ने " आयुर्जीनोमिक्स और प्रकृति : व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल के

लिए पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का अभिनव एकीकरण "पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

सीएसआईआर-निस्पर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुमन रे ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

तत्पश्चात डॉ. शाइज़ी लायीक और सीसीआरएएस (आयुष मंत्रालय), नई दिल्ली की टीम द्वारा प्रकृति परीक्षण और निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

का आयोजन भी किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न रोगों की रोकथाम और प्रबंधन में आयुर्वेद की क्षमता के बारे में जागरूकता पैदा करना था, साथ ही भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में इसके योगदान के बारे में भी बताना था।

सीएसआईआर-सीरी में 10 किलोवाट डीसी माइक्रोग्रिड-आधारित एग्रीवोल्टिक्स प्लांट का उद्घाटन

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी के वैज्ञानिकों ने 10 किलोवाट डीसी माइक्रोग्रिड-आधारित एग्रीवोल्टिक्स प्लांट तैयार किया है जो न केवल ऊर्जा बचत में उपयोगी होगा बल्कि कृषि उत्पादन में वृद्धि के द्वारा किसानों की आय बढ़ाने में भी मददगार होगा। यह एग्रीवोल्टिक्स प्रणाली, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित परियोजना के अंतर्गत सीएसआईआर-सीरी द्वारा विकसित की गई है। यह तकनीक कृषि भूमि के दोहरे उपयोग के लिए सौर-फोटोवोल्टिक-आधारित डीसी माइक्रोग्रिड का लाभ उठाती है, जिससे किसानों को खेती के साथ-साथ ऊर्जा उत्पादन का भी अवसर मिलता है।

सीएसआईआर-सीरी ने अपने 72वें स्थापना दिवस पर यह उल्लेखनीय तकनीकी उपलब्धि हासिल की। स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर चंद्रभास नारायण, निदेशक, राजीव गांधी सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी (आरजीसीबी), तिरुवनंतपुरम द्वारा 10 किलोवाट डीसी माइक्रोग्रिड-आधारित एग्रीवोल्टिक्स प्लांट का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित सीएसएमसीआरआई-भावनगर के निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन और आईआईआईएम-जम्मू के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद भी उपस्थित थे।

उद्घाटन के उपरांत प्रोफेसर चंद्रभास नारायण ने इस प्लांट पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह एग्रीवोल्टिक्स



तकनीक न केवल ऊर्जा और कृषि के क्षेत्र में नई संभावनाओं को जन्म देगी, बल्कि भारत के छोटे किसानों के लिए समृद्धि का एक नया मार्ग भी प्रशस्त करेगी।

सीएसआईआर-सीरी की यह पहल देश में संधारणीय कृषि और हरित ऊर्जा के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है।

इस प्लांट के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित प्रोफेसर नारायण सहित सीएसएमसीआरआई-भावनगर के निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन और आईआईआईएम-जम्मू के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद ने सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ. पंचारिया एवं शोधकर्ता वैज्ञानिक डॉ. आनंद अभिषेक, अनिर्बान बेरा और उनकी टीम की सराहना की।

एग्रीवोल्टिक्स प्रणाली

एग्रीवोल्टिक्स खेती, जिसे सौर ऊर्जा के दोहरे-उपयोग या एग्रीसोलर के नाम से भी जाना जाता है, वह प्रक्रिया है जिसमें फसलों को सौर पैनलों के नीचे या उनके आस-पास उगाया जाता है। इस प्रणाली से भूमि को कृषि के साथ-साथ सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए

उपयोग किया जाता है, जिसका उद्देश्य दोनों उद्योगों को लाभ पहुंचाना है।

एग्रीवोल्टिक्स प्रणाली के कई लाभ हैं, जिनमें ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि, छाया पसंद करने वाली फसलों की अधिक उपज, और सिंचाई के लिए पानी की आवश्यकता में कमी प्रमुख हैं। संस्थान द्वारा विकसित प्रणाली को इस तरह से अनुकूलित किया गया है कि यह फसलों को अपेक्षित न्यूनतम छाया के साथ सौर ऊर्जा का अधिकतम उत्पादन कर सके। इसके तहत सालाना लगभग 15,000 यूनिट बिजली का उत्पादन किया जा सकता है और पैनलों के नीचे की मिट्टी का तापमान 5°C से 10°C तक कम हो सकता है, जिससे फसलों की वृद्धि में मदद मिलती है।

इस प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भारत के छोटे और मध्यम किसानों के लिए बेहद लाभकारी साबित हो सकती है। यह सोलर पैनलों के माध्यम से बिजली उत्पादन के साथ-साथ उनके कृषि उत्पादन को भी बढ़ावा देती है, जिससे किसानों की आय में भी वृद्धि होगी।

सीएसआईआर-सीडीआरआई और जाइडस लाइफसाइसेज लिमिटेड ने एक संयुक्त अनुसंधान समझौते पर हस्ताक्षर किया

सीएसआईआर- केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) में किए गए शोध और प्रतिरक्षा-आधारित थेरेपी (बायोलॉजिकल) के आंकड़ों के आधार पर, प्रोटीन स्कलेरोस्टिन क्रोनिक किडनी रोग (सीकेडी) से प्रेरित ऑस्टियोपोरोसिस और पोस्टमेनोपॉज़ल ऑस्टियोपोरोसिस के इलाज के लिए एक आशाजनक दवा के रूप में उभरी है। अध्ययनों से पता चलता है कि स्कलेरोस्टिन प्रोटीन अस्थि मेटाबॉलिज्म संबंधी



असामान्यताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सीकेडी और ऑस्टियोपोरोसिस के उन्नत चरण वाले रोगियों में, स्कलेरोस्टिन का स्तर अधिक होता है। सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और जाइडस लाइफ साइसेज लिमिटेड, अहमदाबाद ने स्कलेरोस्टिन के छोटे अणु अवरोधकों की खोज करके ओरल दवाओं को विकसित करने के लिए एक संयुक्त अनुसंधान समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौते के तहत सीडीआरआई और जाइडस संयुक्त रूप से प्री-क्लिनिकल रिसर्च करेंगे। इन प्रयासों से जो भी दवा निकलेगी, उसे भारत और अन्य बाजारों के लिए जाइडस द्वारा विकसित किया जाएगा।

क्रोनिक किडनी रोग (सीकेडी) दुनिया की 10 प्रतिशत से अधिक आबादी को प्रभावित करता है, जो एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियाँ पेश करता है। क्रोनिक किडनी रोग की मुख्य जटिलताओं में से एक खनिज मेटाबॉलिज्म का विघटन है, जिससे ऑस्टियोपोरोसिस और फ्रैक्चर का खतरा बढ़ जाता है। इसमें 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोग, विशेषकर महिलाएं, अधिक जोखिम में हैं। दुर्भाग्य से, अधिकांश पारंपरिक एंटी-ऑस्टियोपोरोसिस दवाएं किडनी की कार्यप्रणाली खराब होने के जोखिम के कारण सीकेडी रोगियों में वर्जित होती हैं। इसलिए, ऑस्टियोपोरोसिस के लिए सुरक्षित और प्रभावी दवाएं विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है जो गुर्दे की कार्यप्रणाली को

खराब किए बिना फ्रैक्चर के जोखिम को कम करे।

समझौता ज्ञापन के इस अवसर डॉ. राधा रंगराजन, निदेशक, सीएसआईआर-सीडीआरआई ने अपनी टिप्पणी कहा कि डॉ. नैबेद्या चट्टोपाध्याय के नेतृत्व में सीएसआईआर-सीडीआरआई ने अस्थि मेटाबॉलिज्म के क्षेत्र में बड़ी प्रगति की है। उन्होंने कहा कि दोनों संगठनों के पूरक कौशल और क्षमताओं के साथ, नवीन उपचारों के माध्यम से भारत की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के साझा मिशन को देखते हुए यह आपसी समझौता विशेष रूप से सार्थक हो जाता है।

तत्पश्चात जाइडस लाइफ साइसेज के

चेयरमैन, श्री पंकज पटेल ने कहा कि जैव चिकित्सा अनुसंधान में सीएसआईआर-सीडीआरआई की व्यापक विशेषज्ञता, औषधि अन्वेषण और विकास के लिए जाइडस के अभिनव दृष्टिकोण के साथ मिलकर एक सकारात्मक तालमेल बनाती है।

उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि दोनों संगठन संयुक्त रूप से अस्थि मेटाबॉलिज्म संबंधी विकारों के इलाज के नए तरीकों का पता लगाएंगी और यह सुनिश्चित करेंगी कि

सीकेडी रोगियों को प्रभावी और किफायती उपचार तक पहुंच प्राप्त हो जो उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाए।

जाइडस लाइफ साइंसेज

जाइडस लाइफसाइंसेज लिमिटेड, लोगों को स्वस्थ और दीर्घ जीवन को पोषित करने व्यापक उद्देश्य के साथ, एक अभिनव जीवनविज्ञान के कार्यक्षेत्र से जुड़ी कंपनी है जो स्वास्थ्य सेवा उपचारों की एक विस्तृत श्रृंखला की खोज, विकास, निर्माण और विपणन की दिशा में कार्यरत है। यह समूह कैंसर संबंधी

उपचारों में महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा चुका है और यह साइटोटॉक्सिक, सहायक और लक्षित दवाओं के साथ समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।

इस समूह में दुनिया भर में 27,000 से ज्यादा लोग काम करते हैं, जिनमें 1,400 वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास संबंधी कार्यों में लगे हुए हैं, और इसका मिशन जीवन विज्ञान में ऐसी नई संभावनाओं को खोजना है, जो गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा समाधानों के जरिए जीवन को प्रभावित करते हैं।

सीएसआईआर-सीएसआईओ तथा पीजीआई ने शिशुओं में गंभीर पीलिया के इलाज के लिए बनाई खास डिवाइस

सीएसआईआर केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सीएसआईआर-सीएसआईओ) तथा पीजीआई ने संयुक्त पहल के अंतर्गत नवजात शिशुओं में गंभीर पीलिया के इलाज को आसान बनाने के लिए एक विशेष डिवाइस बनाई है। इस डिवाइस से बच्चों में खून बदलने की प्रक्रिया के लिए तैयार डबल वॉल्यूम एक्सचेंज ट्रांसफ्यूजन अब ढाई घंटे के बजाए 45 मिनट में पूरा हो सकेगा। वहीं, इसमें गलती की गुंजाइश भी नहीं रहेगी। पीजीआई और सीएसआईओ के 5 वर्षों के शोध को काफी सराहना मिली है। इस डिवाइस के पेटेंट के बाद ट्रांसफर ऑफ टेक्नोलॉजी की प्रक्रिया पूरी कर इंडस्ट्री पार्टनर के साथ बाजार में उतारने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

पीजीआई के एडवांस पीडियाट्रिक सेंटर के प्रो. सौरभ दत्ता और सीएसआईओ

के वैज्ञानिक डॉ. संजीव वर्मा ने बताया कि मैनुअली चार चरण में की जाने वाली प्रक्रिया को दो चरण में पूरा किया जा सकेगा। अगर



किसी भी स्तर पर चूक हुई तो तत्काल सेंसर आगाह करेगा। जैसे-जैसे प्रक्रिया पूरी होगी डिवाइस पर डिसप्ले होगा। प्रो. सौरभ दत्ता ने बताया कि मैनुअली इस प्रक्रिया में लगभग ढाई घंटे का समय लगता है। इस प्रक्रिया के दौरान कम से कम एक डॉक्टर और एक नर्स तैनात रहते हैं। एक-एक प्रक्रिया को लगातार चार्ट पर लिखना होता है कि कितने चरण पूरे

हो गए। इस दौरान गलती होने का खतरा भी रहता है। इन सभी जटिलताओं को देखते हुए इन मैनुअल प्रक्रियाओं को स्वाचालित करने पर विचार किया गया। इस डिवाइस में ये सारी प्रक्रिया फीड हैं, यह रक्त निकालने के समय, एयर बबल, क्लॉटिंग, ब्लड सेल ब्रेकिंग सभी प्रक्रियाओं पर एक साथ नजर रखती है। नवजात के लिए एयर बबल बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। ये नवजात के हृदय के अंदर बने कनेक्शन के माध्यम से ब्रेन तक पहुंच जाता है।

उस स्थिति में अगर वो बबल फंस गया तो खून जम सकता है। इससे तत्काल स्ट्रोक हो सकता है। यह डिवाइस इन सभी की जानकारी तुरंत मुहैया कराती है, जिससे डॉक्टर को उचित निर्णय लेने में सहयोग प्राप्त होता है। इस डिवाइस को बनाने में सीएसआईआर-सीएसआईओ के डॉ. अरिंदम चटर्जी का भी विशेष योगदान रहा है।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में इंडो-जापान सम्मेलन का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने 12-13 अगस्त 2024 को "अग्नि इंजीनियरिंग के माध्यम से बड़े-बड़े शहरों में आग की घटनाओं की जांच" पर एक इंडो-जापान सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में विशिष्ट प्रतिभागियों के रूप में निहोन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. संजय पारीक, डॉ. हिदेकी योशीओका, एसोसिएट प्रोफेसर, टोक्यो विश्वविद्यालय, डॉ. के.सी. वाधवा, वरिष्ठ सलाहकार

एनडीएमए, और अध्यक्ष अग्निशमन उपकरण समिति, बीआईएस, श्री जितेंद्र सिंह, अतिरिक्त सदस्य (सेवानिवृत्त), रेल मंत्रालय, श्री प्रशांत लोनकर, अग्निशमन सलाहकार, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. सुवीर सिंह, पूर्व मुख्य वैज्ञानिक और प्रमुख, एफएसई, सीएसआईआर-सीबीआरआई, प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार (सेवानिवृत्त आईआईटी रुड़की) और फायर सेफ्टी इंजीनियरिंग (एफएसई) समूह के सभी वैज्ञानिक और छात्र शामिल हुए।

सम्मेलन का उद्घाटन सीएसआईआर-



सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने किया, जिन्होंने जापान और भारत से आए अतिथियों का स्वागत किया और अपने उद्घाटन भाषण में इस विषय के महत्व पर प्रकाश डाला और अग्निशमन क्षेत्र की बेहतरी के लिए अग्नि

इंजीनियरिंग में संयुक्त अनुसंधान की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। देश। उन्होंने सुझाव दिया कि यह

बैठक सरकार को एक विशेष फोकस क्षेत्र प्रदान करेगी। इस बैठक का समन्वयन एफएसई समूह के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और सह-समन्वयक डॉ. सौरभ जैन ने किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य आग से संबंधित प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा करना था।

इस कार्यक्रम में बड़े शहरों में अग्नि इंजीनियरिंग और इस क्षेत्र में टोक्यो विश्वविद्यालय, निहोन विश्वविद्यालय और सीएसआईआर-सीबीआरआई के बीच सहयोग के भविष्य के क्षेत्रों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों / जनसम्पर्क अधिकारियों / हिन्दी अधिकारियों / अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों / पुरस्कार / सम्मानों / कार्यशालाओं / संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार / सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार